

युवा प्रभाग-दिव्य दर्पण ग्रुप
सितम्बर, 08 मास के पुरुषार्थ की प्वाइंटस

सितम्बर मास का चार्ट: इस मास में हम विशेष जीवन की छोटी-छोटी बातों में परमात्म शक्तियों की अनुभूति करेंगे और सम्पूर्ण अनासक्त बनने का लक्ष्य रखेंगे।

विधि :

इस मास में चार सप्ताह के लिए चार परिस्थितियों में परमात्मा शक्तियों का अनुभव करेंगे और निम्नलिखित चार बातों में सम्पूर्ण अनासक्त बनेंगे :

सप्ताह	परिस्थिति	शक्ति	दृढ़ संकल्प	दिव्य दर्पण की धारणा	सम्पूर्ण अनासक्त
प्रथम	असम्भव से सम्भव	स्नेह	हम नहीं करेंगे तो और कौन करेगा	कौन-सी बात असम्भव लगी उसे सदा के लिए सम्भव कैसे बनायेंगे	भोजन में
दूसरा	विघ्न को लगन बढ़ाने का साधन समझना	सर्व शक्तियाँ	तूफान को तोहफा समझना	रात को बाबा को पत्र में सारे विघ्न लिखना और अमृतवेले उसका निवारण बाबा से लेना	पहनने में
तीसरा	विरोधी को मित्र बनाना	शान्ति	गाली देने वाले को गले लगाना	व्यवहार में कौन-से गुण को अपनाया जिससे विरोधी को मित्र बना पाये	साधनों से
चौथा	देवताई स्वरूप धारण करने में	पवित्रता	कल्प पहले वाली मैं ही देवात्मा हूँ	आज अमृतवेले बाबा ने कौन-सा श्रृंगार किया और सारे दिन में उसे धारण करने का अनुभव	नाम,मान और शान से

❖ फ्रेमबुक में ऊपर चार पंक्तियों में निम्नलिखित बिन्दु लिखकर उसका परिणाम प्रतिदिन रात को सोने से पहले लिखें:

1. गुड मोर्निंग - 3.30
2. अमृतवेला - 3.30 से 4.45, बाबा के कमरे में
3. व्यायाम/पैदल - हाँ जी
4. ट्रैफिक कंट्रोल - 5
5. मुरली क्लास - क्लास में सुनी
6. अव्यक्त मुरली पढ़ी? - हाँ जी
7. स्वमान की स्मृति - बहुत अच्छी
8. परिस्थिति में विजयी बनें - 60%
9. सम्पूर्ण अनासक्त रहें - 70%
10. गुड नाइट- 10.30

■ परिस्थिति में विजयी बनें - हम इतने भाग्यवान हैं जो परिस्थितियों को पार कराने के लिए स्वयं सर्वशक्तिवान भगवान मददगार है। हमारे लिए कोई भी परिस्थिति असम्भव नहीं, मुश्किल नहीं। संसार के विघ्नों को मिटाने के लिए बाबा ने हमें निमित्त बनाया है। परिस्थिति में हम कितना विजयी बनें वो % में नोट करना है। उसके लिए विशेष अमृतवेले हम अभ्यास करेंगे उस शक्ति का जो परिस्थिति में विजयी बनने के लिए बताई है।

अमृतवेले का अभ्यास : अमृतवेले विशेष परमधाम निवासी बाबा के पास जाकर कुछ मिनट के लिए उस शक्ति का अनुभव करें जो दी गई है। उस शक्ति से भरपूर होकर के फिर कुछ मिनट उस शक्ति को समस्त संसार में फैलायें।

■ सम्पूर्ण अनासक्त:-

1. भोजन अनासक्त होकर स्वीकार करना : भोजन लेते समय यह चेक करें कि भोजन आसक्तिवश तो नहीं लेते हैं? कोई चीज़ ज्यादा अच्छी लगने पर अधिक खाया हो वा जो भोजन है वो अच्छा नहीं लगता इसलिए कुछ और खाने की इच्छा हुई हो, यह भी आसक्ति है। आपने कितना % अनासक्त रह कर के भोजन खाया, वह लिखना है।
2. पहनने में अनासक्त : किसी की अच्छी साड़ी देखी, अच्छा कपड़ा देखा, जूते देखकर इच्छा होना। यह भी हमारा योग तुड़वाता है। आप कितने % अनासक्त रहे, यह लिखना है।
3. साधनों से अनासक्त : बाबा कहते हैं कि हमारी साधना साधनों के आधार पर न हो। हम चेक करें कि कोई भी साधन रुक जाये तो मेरा बुद्धियोग साधन की ओर जाता है या बाबा की ओर। जैसे कि गर्मी के दिनों में फैन नहीं चले तो, बिजली चली जाये तो चलेगा। इसमें चेक करें हम कितना % अनासक्त रहें?

4. नाम,मान और शान से अनासक्त : अगर कोई भी कर्म वा सेवा करने के पश्चात यह संकल्प आता है कि कोई मेरा नाम ले, कोई मुझे मान दे .तो हम नाम, मान और शान का कच्चा फल स्वीकार कर लेते हैं और वह की हुई सेवा कभी भी जमा नहीं होती। अतः चेक करें कि क्या मैं अनासक्त होकर सेवा कर रही हूँ। कितना % अनासक्त रही?

❖ दिव्य दर्पण की धारणाओं की जो प्वाइन्टस लिखी हैं वे फ्रेम बुक में आज की मुरली के पश्चात् इस प्रकार लिखना है:

1. प्रथम सप्ताह - कौन-सी बात असम्भव लगी उसे सदा के लिए सम्भव कैसे बनायेंगे : रोज रात को जो बात स्वयं के लिए असम्भव लगे उसे लिखना है और दूसरे दिन अमृतवेले दृढ़ प्रतिज्ञा के साथ उसे सदा काल के लिए सम्भव बनाने के लिए क्या करेंगे, वह लिखना है और उसमें कितना % विजयी बने, यह जरूर लिखना है।
2. दूसरा सप्ताह - रात को बाबा को पत्र में सारे विघ्न लिखना और अमृतवेले उसका निवारण बाबा से लेना : जो जीवन में विघ्न हो उसे रोज रात को बाबा को पत्र में लिखना और दूसरे दिन अमृतवेले बाबा से उसका निवारण लेना, शक्ति लेना और दिनभर उसे प्रेक्टिकल में लायें। चेक करें कितना % विजयी बने।
3. तीसरा सप्ताह - व्यवहार में कौन-से गुण को अपनाया जिससे विरोधी को मित्र बना पाये : हमें इस संगमयुग में तीन सर्टिफिकेट लेने हैं : स्वयं से सन्तुष्ट, बाप से एवं ब्राह्मण परिवार से सन्तुष्ट। अगर किसी आत्मा से ऐसा लगता है कि यह आत्मा मेरी विरोधी है तो कैसे भी करके उसे मित्र बनाना है। उसे मित्र बनाने के लिए आप ने कौन-सा गुण धारण किया वह लिखना है। उसमें आप कितने % सफल हुए, वह लिखना है।
4. चौथा सप्ताह- आज अमृतवेले बाबा ने कौन-सा शृंगार किया और सारे दिन में उसे धारण करने का अनुभव : बाबा हम आत्माओं को शुद्र से ब्राह्मण, ब्राह्मण से देवता बनाने आये हैं। रोज अमृतवेले बाबा मुझ आत्मा का शृंगार करते हैं तो आज कौन-सा शृंगार किया और वह बनाए रखने के लिए मैंने सारे दिन में क्या-क्या किया, वह लिखना है एवं कितना % वह शृंगार रहा, वह लिखना है।

स्वमान:

असम्भव से सम्भव :	16. मैं आत्मा शान्ति प्रिय हूँ।
1. मैं असम्भव को सम्भव करनेवाली हिम्मतवान आत्मा हूँ।	17. मैं आत्मा विरोधी को मित्र बनाने वाली हूँ।
2. मैं परमात्मा प्यार में लीन रहनेवाली लवलीन आत्मा हूँ।	18. मैं आत्मा गाली देने वाले को गले लगाने वाली हूँ।
3. मैं परमात्मा स्नेह का सबूत देने वाली आत्मा हूँ।	19. मैं आत्मा ग्लानि करने वाले पर फूल चढ़ाने वाली हूँ।
4. मुझ आत्मा के लिए कोई भी कार्य असम्भव नहीं।	20. मुझ आत्मा का स्वधर्म शान्ति है।
5. मैं आत्मा परमात्म स्नेह के रिटर्न में स्वयं को टर्न करनेवाली हूँ।	21. मैं आत्मा सच्चे प्यार की मूरत हूँ।
6. सर्व समर्थ के साथ से मुझ आत्मा के लिए सब सम्भव है।	देवताई स्वरूप :
7. मैं असम्भव को सम्भव बनाने वाली जादूगर आत्मा हूँ।	22. मैं आत्मा पवित्रता की देवी हूँ।
विघ्न को बनायें लगन का साधन :	23. मैं आत्मा पवित्रता के शृंगार से शृंगारित हुई हूँ।
8. हजार भुजाओं वाला भगवान मुझ आत्मा का साथी है।	24. मेरा शृंगार स्वयं भगवान करते है।
9. मैं आत्मा मा. सर्व शक्तिवान हूँ।	25. मैं आत्मा पवित्र ताजधारी हूँ।
10. मैं आत्मा विघ्न विनाशक हूँ।	26. मैं आत्मा कल्प पहले वाली देवात्मा हूँ।
11. मैं आत्मा निर्विघ्न हूँ।	27. मैं आत्मा प्रकृतिजीत हूँ।
12. मुझ आत्मा का साथी सर्वशक्तिवान है।	28. मैं आत्मा मायाजीत हूँ।
13. मैं आत्मा सर्वशक्तियों से सम्पन्न हूँ।	29. मैं आत्मा परम पवित्र हूँ।
14. मुझ आत्मा के लिए तूफान भी तोहफा है।	30. मैं आत्मा पूर्वज हूँ।
विरोधी को मित्र बनाना :	
15. मैं आत्मा शान्तचित्त हूँ।	

Phone No: (079) 26444415, 26460944 Email: bkyouthwing@gmail.com

Website: www.bkyouth.org